

२८ अध्याय.

पान ४५ -

७५९- शोक



1

श्री १२५

१२५



१२५

४ जय जय सद्गुरु
५ जय जय सद्गुरु

श्रीगणेशाय नमः ॥ जय जय सद्गुरु परमः जय जय सद्गुरु पु
रुषो नमः जय जय सद्गुरु परब्रह्मः ब्रह्मा ब्रह्म नो मनुष्येति
॥१॥ जय जय सद्गुरु चिदैकमुक्तिः जय जय सद्गुरु चिदात्मजो
ति जय जय सद्गुरु चिनु निःसुती अमुति चिदृपा ॥२॥ जय जय
सद्गुरु ससात्रः जय जय सद्गुरु सनात्रः सदैकाक्षरसद्गुरु ॥३॥
जय जय सद्गुरु स्वानंदमान जय जय सद्गुरु स्वानंदपुर्ण ॥
जय जय सद्गुरु स्वानंदघण्टा जय जय सद्गुरु स्वानंदगो उपलतुसेनि ॥४॥
जय जय देवै अग्रलिः जय जय देवै सिरोमनि ॥ सकलदेव
त्कारति चरलिः देवयुता मलि देवराया ॥५॥ जय जय जिवा
दिष्वादि जिवाः जय जय देवादिष्वादि देवा ॥ जय जय जीवशी
वादिष्वादिस्वीवाः जय जय अपि नवागुरु राया ॥६॥ जय जय स
द्गुरु सुखसंपन्नाः जय जय सद्गुरु सुखनिधानाः ॥

२

१११

१११

जय जय सद्गुरु सुखैक्यताः सुखा सुखपत्तुसे
नि॥७॥ तु सेन सुखा निज सुख च उः तु से नि बो धा निज बो धु आ तु
उ॥ तु से नि ब्रह्मा ब्रह्मैव जो उः तु से नि प ठि पा उं तुं ये कु ॥ ७ ॥ असास
दुरु तुं श्री अनंतुः तु स्यात्स र या सि ना हि जंतुः वे तुं हो उ नि क्त या यु क
निज बो धी त नि ज भ क्त ॥ ७ ॥ आ पु ते नि ज र प बो ध न ॥ नु र वि सि
देव भ क्त प लः स्या हि व रि नि ज भ ज नः अ द्व यं पु र्ण क र वि सि ॥ ७ ॥
अ द्व यं क रि तां तु सि भ क्तिः तुं सं तो षि स य था स्थि ति ॥ सं तो षो नि सि
ष्या हा तिः नि जा त्म संप वि ष वि सि ॥ ७ ॥ अ पु नि नि जा त्म भ र भा
रुः त्रि ष्य गुरु त्वे क रि सि थो र हा ण ति त्वा घ वि च म त्को रुः अ
त क्य वि चारु त क्ते नां ॥ ७ ॥ जं अ त क्य वे द शा स्त्रां सिः ज्या त्मा
गि वे वा द ति अ हि नि सि ॥ वे तुं क्ष ता र्थे बो धि सिः स सि ष्या सि
नि ज बो धे ॥ ७ ॥ तु स्या नि ज बो धा यि हा त व तिः प ठ तां वे द वे

दांतको विःत द्वि अलक्ष लक्षेणा द्रुष्टिः सर्वाधिगोष्टिषु गम्य ॥१४॥
बहुंतकल्ले कल्ले ह्यगतिः नानापरिव्यायुक्तिर्वा लिति ॥ परिते
नकलो निवोसणातिः जे विशुकव्यो लिसुसासिते ॥१५॥ यात्मा
गितु सिबोधकशक्तिः अगम्य सर्वासि सर्वाधि ॥ तु सित्ताधत्न्यं क्व
यायुक्तिः अगम्य पावति सुगमते ॥१६॥ जे अगम्य अिभागवतः सादि
माजिये कादशार्थः प्राकृतं करवितायेथार्थः बापसमर्थकपाठ
॥१७॥ दधि मथुनियां समुजः उ किमताकाठिनवनितः ते आइतेवा
काहाति देतः ते से कले येथे जनादगे ॥१८॥ वेदशास्त्राये निजमथि
तः व्यासकाठिले श्रीभागवत ॥ सायण गवतायामथितार्थ ॥ जात्यनि
थितयेकादशु ॥१९॥ सायेकादशाये गोउपल ॥ सर्वथानेने मिजा
पलः ते जणादेने करुणिमथनः सारांशुपुर्णमजदिधत्ता ॥२०॥ तो
स्वभावे वा लितां तां डिः तागलियेकादशाधिगोडि ॥ सागोउपला
धिभावतिः टिकायवेवटिं चालिति ॥२१॥ यात्मा गियेकादशा

(१५)

॥१५॥

चि टिका ये कला ^{३५} न के ये काः ये किं ये कु मितो लि दे स्वा ॥ ग्रंथुनेट -
कानिर्वा छि ला ॥ २२ ॥ मा गे पु ठे ये कु ये काः हे ये का द शा ये र प दे स्वा ॥ ते गे
ये क प ले या लि लि टिका ॥ सा ह नि ज स र वा ज नार्द नु ॥ २३ ॥ ज नार्द ने ये आ
पु लेंः ये किं ये क प ल दृ ठ के ले ॥ तं वि ये का द शो य्या अ र्था आ लेः ये कि मि
न लें ये क व ॥ २४ ॥ जे वि जे व गि गो उ यो सुः ते वि भा ग व ति ये का द शु
सा हि मा जि अ ष्टा वि सु ॥ अ ति सु स र्वा जि रा ॥ २५ ॥ स र्वा गी सि र प्र
मानः ते सा अ टा वि सां वां ज नार्द न व थि ल जे नि रो प लः तो स्वा नं
द जा ल सो लि व ॥ २६ ॥ तो हा अ टा वि सां वा अ ध्या वोः ब्र ह्म सु र वा
या नि ज नि र्वा हो ॥ उ ध्वे न पु स ता पा हो ॥ स्व यं दे वा धि दे वो सां ग हा
तु ॥ २७ ॥ उ ध्वे न क रि तां प्र क्षः कां सां ग ता हे श्री कृ ष्ण ॥ ये अ थि
ये नि रो प ल ॥ सा व धान प रि सां वे ॥ २८ ॥ उ ध्वे व कृ ष्णो कि नि ज
ज्ञानः पा वो नि जा ला ज्ञान सं प न्न ॥ ते ए ये वो पा हे शाना मि मान
जा ल प ल अ नि वार ॥ २९ ॥ ज ग मु र्व मि ये कु शा ताः ऐ सि य ठे

लजे अहंता ॥ ते गुण दोषां चिकथा ॥ दाविल सर्वथा सर्वत्र ॥ ३० ॥
 लदोषा ये दुरुषण ॥ ते ये निरोरामा वळे शानः येथ वरिशाणा सि
 मानः बाधक जाण साधकां ॥ ३१ ॥ गुण दोषां ये दुरुशनः जे रश्चर
 देखे आपण ॥ तो हिना उपावे जाणः इतरां बाको लपेयाउ ॥ ३२ ॥ अ
 पिमान्वा घिसदा सिवा ॥ तो हिना गिरा जिवभावा ते ये मनुष्या वा
 को लके वाः अहंते जिवामुक्त वकें ये ॥ ३३ ॥ या परिगुण दोष दुरुषण
 साधकां बाधक होय पुती ॥ या कसे याचे निवारणः न करिता प्रक्ष
 हरि सांगे ॥ ३४ ॥ बालक नेगे निज निरुते ये साक्षपें प्रवर्ते माता ॥
 तें उथवाचे निज स्वार्थः श्रीकृष्णार्थक वळा ॥ ३५ ॥ शाना पि
 मानां ये बाधक पणः सर्वथा साधकां न कले जाण ॥ या ला गिन
 करितां हिं प्रश्नः साये निराकारण हरि सांगे ॥ ३६ ॥ उद्धव जन्म ल
 या देववों सिः या देव निमति ब्रह्म सापें सि ॥ ते ये वां यवा व्या उद्ध
 वा सिः पुर्ण शाणा सि हरि सांगे ॥ ३७ ॥ जे ये देहा तित जा मशान

७

॥ ३१ ॥

वि

त्वयं न बधीशा पबंधन ॥ हं जागौ नियां श्रीकृष्ण ॥ पुर्णब्रह्मज्ञान उपदे
 सि ॥ ७७ ॥ जे विसाखरे वरिमांशि ॥ ते विकृष्णमुर्तिपांसिः प्रितिज उ लि उद्ववा
 सि ॥ भावो येक दे सि दृढ जात्य ॥ ७८ ॥ कृष्णायासु निदु रिजा तां उ उ व प्रा
 सां उ लि त त व ताः ते मो उ व्या येक दे सि ष व स्थाः ब्रह्म सम ता ह रि सां गे ॥ ७९ ॥
 येक दे सि जा ल भावो ॥ तो श्रीकृष्णाना व उ पो होः यो ला गि दे वा घि दे वाः ब्र
 ह्म सम न्व यो स्व ये सां गे ॥ ८० ॥ उ उ व ष स तां कृष्ण ज व लिः ब्रह्म शा पं हो र
 ले हो लि ॥ या ला गि या सि व न म ॥ उ उ व ब्रह्म यु का लिं चा लं पा हे ॥ ८१ ॥
 कृष्णाव ग ता उ ध व जा तां वि य ग वा घि नां चि ता ॥ ये सि षा पु लि स व या वे
 ग त ताः उ ध वा सि त ल त्रा ह रि बो धी ॥ ८२ ॥ श्री भ ग वा नु वा च ॥ श्लोक
 परः स्व भा व क र्मा नि न प्र शं स न्त ग र्ह ये त् ॥ विश्व मे का म क प र्श य त् क
 सा पु र षे ण च ॥ १ ॥ टिका ॥ जो नि रा वृ या सो लि व रा ब्धुः ज्या ये नि श्वा सि
 ज न्म ल्ळे वे द ॥ उ ध व हि ता र्थ गो विं द ज्ञान वि शु ध स्व ये सां गे ॥ ८३ ॥ सं सा
 रि मु र ख्य ति न्दि गु णः त्रि गु णा स्तं व त्रि वि ध ज न ॥ सां ये स्व भा वि क क र्म

5

॥४६॥

जागःशां तदातग आगिमिश्र ॥४४॥ याकमीये निदास्त्वन् सर्वथान
 करांवेष्वापताः येकायेवाहितांमलेपग ॥ इतरांकु डेपग ते गेचिबोखे ॥४५॥
 पांयामा जिमलेपल ॥ येकायेवाहितांआपग ॥ इतरजेयोवेजगःतेस
 हजेजागनिदिते ॥४६॥ वामसव्यजभयभागः दोनायेयेकचिआग ॥ तेवि
 प्रकृतिपुरुषामकजग ॥ चिद्वेपयागयेकत् ॥४७॥ जगब्रह्मरुपेपरिषुर्ग
 यात्तागिनीदाआगिस्त्वन् ॥ सुतमात्रायेष्वापगः कदाकोळजागनका
 रांवे ॥४८॥ सर्वश्रुतांयातांः आसावाजुअसपांहिं ॥ यात्तागिनिदास्तुति
 कंहिः प्राणांतेपांहिनकरावि ॥४९॥ इवानिदास्तुतिचिकथाः सांडिसं
 डिमासर्वथा ॥ तरिचपावसिपंरमाथाः निजस्वार्थनिजबोधु ॥५०॥ सर्व
 श्रुतिभगवद्वावोः हाब्रह्मस्थितिवा निवाहो ॥ यासिकदानवेअपावो
 जेकतोभावउद्वा ॥५१॥ जेशुनियेवोरिचेअपावोः तेयेदृठवाठान्य
 सगवद्वावो ॥ तेकाअपावोचिहोयउपावोः विद्वासिवावोअसेना ॥५२॥
 हेस्थितिसाडुनियांडुरिः मिज्ञाताहागर्वधरि ॥ निदा

(5A)

स्तुतिव्याप्तरोवरि ॥ तोअनथीमाशारिनिमश ॥ ५३ ॥ स्तोक ॥ परस्वभावक
 र्माणियः प्रशंसतिनिदति ॥ सखाशुभंस्थतिस्वार्थादिसयपिनिवेतिवः
 ॥ १ ॥ टिका ॥ मियेकुसर्वशज्ञानापुरगः येसाधरुनिज्ञानाप्रिमान ॥ जगाचै
 देखेदोषगुणः निंदाब्राह्मणमुखाते ॥ ५४ ॥ पराचेंस्वभाविककर्मः स्वये
 निंदणंहाअधर्म ॥ हनुमंतज्ञानापरमसासिकानरि कर्मसोडिना ॥ ५५ ॥
 नारदज्ञातेपणमोटाः ससमानत्वाश्रेष्ठश्रेष्ठा ॥ तोहिकलित्वावाकलि
 कटाः स्वभावयेष्टाअनिवार ॥ ५६ ॥ तउदेवायेवाहनः सदातिष्टेहा
 तजोडुन ॥ तोहिकरिसर्पशत्रुयेसेकर्मजातस्वभाविक ॥ ५७ ॥
 विचारितांजगत्रिगुणगुणानुसारंकर्मचरणः तेथेपाहातांदोष
 गुणः दोषिज्ञाणपाहेतो ॥ ५८ ॥ जगिपाहावियेकासताः हेप्रह्लाद
 तिगासर्वथाः स्याउनिगुणदोषापाहातांः तोनिजामघाताप्रवर्ते ॥ ५९ ॥
 स्वभांवेभेटल्यासज्जाणः क्षोधुनपाहेदोषगुण ॥ यापरिज्ञानाप्रि

6

॥५५॥

मानः निंदास्तवनउपजवि ॥६०॥ अस्मिमानाचिजातिकैसिः अधिकस्ववलेस
 शालापासिं ॥ तोदास्वविगुणदोषांसिः निंदास्तवनासितुद्वोधि ॥६१॥ आपुत्या
 वृतासिंसमानः साये अळमालुकदिस्तवन ॥ आपत्यासिज्यायानमनेगुणः सा
 सिनिदि आपलायेथेष्ट ॥६२॥ निंदास्तुसिउपजेजेथे ॥ फेउक्षो मळाउदितेथे ॥ निः
 शेषनिर्दलिपरमार्थमाहाजनर्थजागीनाजे ॥६३॥ निंदिपाविंजनर्थः उधारळा
 गांनेदितेथ ॥ रोका अं गी जादळकविजस्यार्थद्यातकु ॥६४॥ फेउसमु
 लमिथ्यायेथेः येथिअर्थिवस्वप्रदुष्टं ॥ स्वयसांगेश्रीकृष्णनाथः दृढप
 रमार्थसाधाव्या ॥६५॥ श्लोक ॥ तेजसनिद्रयापनेपिउस्थानष्टयेतनः ॥
 मायां प्राप्नोतिमृसंवातद्वन्नानायेदृशुमान् ॥३॥ विका ॥ ईद्रियेजन्मलि
 स्जोगुणिं ॥ तन्मात्राविषयोतमोगुणिं ॥ तोईद्रिईविशयोसेउनिःवेलिनि
 द्रास्थलिनिश्चळ ॥६६॥ जाएतिविश्वअस्मिमानिः दोहिजातिमावळो
 निःतेकांमिथ्याप्रपंचुस्वप्नि ॥ तेजसुअस्मिमागिविस्तारि ॥६७॥ स्फुल्लदेह

धीः

असेनिश्चळःस्वप्निम

नयिकेवळ ॥ विस्तारिभवजालः लोके सकळत्रे लो कि ॥६८॥ सास्वग्रामाजि
ले शुष्टिसिजागः उपति स्थिति जातिनिदान ॥ स्वयेदे स्वतां हि जापण
जन्ममरणमिथ्या ॥६९॥ ते विहाज विद्या दिव्य स्वप्नः वृथा विस्तारिअभी
मान ॥ तेथीलमिथ्या जन्ममरणः तुं ब्रह्मपुर्णपुर्णवै ॥७०॥ तु स्यानिजरुपा
यावांईः मेदायिवार्तनाहि ॥ तेथिलुं मा शुभकां हितु जसर्वथापां हिंस्य
ईनां ॥७१॥ श्लोक ॥ किंमद्रं किममद्रं वा दैतस्यावस्कनः कियत् ॥ बायो
दितं तद्दं नृतं मनसाध्यातमेव यत्तु टिका ॥ जे जन्मले चिना हिः ते
काळे गोरें सांगों काईः ग्रहणे विलकं हिः स्वग्रा शुपां हिं दिसेना ॥७२॥
उखरिं भासले मृगजळ तें स्वाळकि वाउतळ ॥ मधुर किं क्षारकेव
ळः सांगतां विकळ विवेकु ॥७३॥ ते विमिथ्या प्रपंचाये भानः तेथिल
दोष जातिमुत्त ॥ निवडितिते स ज्ञानः अज्ञाना मा जि ॥७४॥ जे विप्रं
वंसे चिरातिः आंधार जो खुं आंधले येति ॥ सां सिजो खितां दों हि हा ति

ये कि हिर तितु केना ॥७५॥ ते विप्रपंचु मिथ्यापणें: ते थेंकां ति जें ऐक लें ॥
 कांडोळां जें देख लें: रस लें ये यां ख लें: स्पर्श लें आं गें ॥७६॥ हातांचे वें जें
 देख लें: पांयांचे चाल लें: वाया जें बोल लें: कळ लें म लें ॥७७॥ ॐ हंकारा बदि
 वारु: चि ताया चिंतन प्रकार: बुधिया विवेक विचार हास मुळ वेकारु मि
 थ्या ते थें ॥७८॥ चित्रिं जल जा ति दुता रा गु ॐ स ज जा ति ब्रा ह्म गु: व्या
 द्र आ ति हरि तु: सा स तां हि जा तां ति चि भा से ॥७९॥ ते विहा प्रपं
 चु द्वैत युक्त: सा स तां भा से व र्तु: ॥ अ द्वैत शुभा शुभ के चें ते थें: ब्रह्म
 सदो दित पुर्ण ॥८०॥ के लिये दि उ उ के लि तां: जो जो प दर तो तो शी
 ता ॥ ते विदे हा दि प्रपंच विवं चि तां: मिथ्या त ल ता मा ईक ॥८१॥ मि
 थ्या प्रपंचां ये तां ई: शुभा शुभ तें ल टिके यां हि: स य व स्तु यां गां ई:
 शुभा शुभ ना हि अ नु मा त्र ॥८२॥ जो शुभा शुभ प्र गे जा हे: सा थिक
 क्क प ला सा स मु ख हो ये ॥ निज क क्क प ला मा हा प्र ये: ज न म र ल

(X)

॥६॥

परि

वाहेनसतेचि ॥ ८३ ॥ श्लोक ॥ छायाप्रसाह्यासासाह्यसंतोप्यर्थकारिणः
 एवंदेहादयोभावाययंसासृक्तोभयं ॥ ८४ ॥ टिका ॥ जकिंप्रतिबिंब
 सायनेसेः जोपाहेतोबिंबलादिसे ॥ मिथ्याप्रपंचाचेरूपतेसेः निज
 कल्पनावेशंसासत ॥ ८५ ॥ जेविप्रतिबिंबपाहोनिनिजडोळाः मिह
 लोनिताविजेठिका ॥ तेनिदेहाभिमानाचासोहळाः जीवाच्याक
 पाळाआदळे ॥ ८६ ॥ कांजापरिचरंयडिसादां होविप्रसोतरे ॥
 तंमिथ्याचिपरिसाचोकारेः अवंताअक्षरेनुमठति ॥ ८७ ॥ निश्चळ
 दोरायेनिजरूपः भ्रमेसासकाप्रचंडसर्प ॥ तोमिथ्यापरिचयकंप
 माहाखटाटोपउपजवि ॥ ८८ ॥ यापरिअसंतदेहादिकः देहाभीमा
 नेजिवासिदेख ॥ जन्ममरणावर्तअनेकः आकल्पदुःखसोमवि
 ॥ ८९ ॥ आत्म्यापासुनिदेहादिसेदुःउपजळाहेबोलेवेदु ॥ वेदरापे
 तुंप्रसिधुः मिथ्यावेवादुघडेकेवि ॥ ९० ॥ येसाउद्धवायाआवांका

५

११५

नि

वेदवादादिआशंकाः समूहकळलियदुनायका ॥ तं चि उत्तर दे स्वा दे तु
से ॥ १० ॥ श्लोक दो नि ॥ आमेव त दि दं विश्वं श्रु ज्यते सृ ज ति प्रभुः ॥ त्रा य
ते त्रा ति विश्वा मा ह्नि य ते ह र ती श्व रः ॥ ११ ॥ त स्मा न्न ह्यात्मनो न्यस्मा द
न्यो भ्रा वो नि रू पि तः ॥ नि रू पि ते यं वि वि धो मू ला भा ति ना म नि ॥ ११ ॥
टिका ॥ प्रपंचु प्रसक्ष विद्यमान ते लोके द युक्तं जाले जन ॥ तेषां शोधि
मासे वेदवचनः प्रपंचुषा फि ह्नि ना म मा ॥ ११ ॥ मुळिं उं सु चि नि
जि विरुठेः तो उं स उं स प लो कां उं व ठे ॥ ते वि प्रपंचु वस्तु योगे वादे
वा उं को उं त दृ प ॥ १२ ॥ जे सें सो न यां ये जाले ले गेः ते व र्त तां व र्त सो
ले प ले ॥ ले गे मो डि लियां सो नेः सो ने प लो स्व त सि ध ॥ १३ ॥ ति लो यि
पु त लि के लिः ते ति लो वें विं शो षे ञ्ज लि ॥ ते मो डि तां स लिः असे
सं य लि ति लु रूप ॥ १४ ॥ ते वि उ स ति स्थि ति नि दानः प्रपंचा सि हो
तां जा ल ॥ तेषां आदि मध्य अवसोनः वस्तु परिपुर्ण सं य लि ॥ १५ ॥

88

येथेभासले जें वराचरतेमि आसाचि साचार॥ मज वेग लजगासि
 थारः अनुमात्रे असेना॥१६॥ एवं श्रुत्य आशि श्रुतीनाः पात्मा आशि प्रति
 पाळिताः संहार आशि संहृती मीयेकामता भगवंतु॥१७॥ येथे उषति
 स्थितिनिदान त्रिविधरूपे प्रपंचपिन्न॥ यां सर्वा सिमि आशिष्ठानः म
 जवेगले जान असेना॥१८॥ प्रपंचमजवरि आभासेः परिमी प्रपंचामाजि
 नसे॥ जे विरगजलायेनिरसेः सूर्यकाळवसें पिजेना॥१९॥ त्रिविध
 प्रपंचाये जाळः मजवरि दिसेहेनि मुळ॥ जे विरगगणभासेसुनि
 ळपरिते ये अलुमाळ निळिनाहे॥२०॥ जगप्रसक्तोलादि
 सेः हे आशं कामानि सिमानसः यज्जनायासेतो बोध॥२१॥ श्लोक॥
 दिठ॥ इदं गुणमयं विद्धि त्रिविधं मायया कृतं॥ एतद्धि द्वाभुद्वि
 तं ज्ञानविज्ञाननेपुणं॥२२॥ ननिंदति नयस्तौ तिलोके चरति सूर्य
 वत्॥ ठिका॥ अध्यास आधिदेव अधिभुतः हे विधे विं जगमायाकृत

तेतु निर्मु ल हणसिकेसे

9

॥८॥

नसर्वे मज्जा जिभासतः जागनिश्चित त्री गुणामक ॥२॥ उद्धवामिथ्याद्वा
 लो नितुं येथः स्रष्टि हो सिउपसायुक्त ॥ ये लो म द्विवेके साधु संतः ज्ञान विज्ञानार्थ्या
 वले ॥३॥ प्रपयाये जे मिथ्या भानः ते चि ज्ञानाये मुख्य ज्ञान ॥ ये लो ज्ञाने ज्ञान संपन्न
 तो चिसमान सर्व भुवि ॥ ४ ॥ याता गि शु तां ये गुणा गुणः कदान वदे निंदा स्तवन ॥
 सुर्याचे परिजाता ॥ विचरे आप्त सम साये ॥ ५ ॥ सामर्थ्ये त म द व दु न जां ता
 कृतां सि सुर्य जे वे आपन ॥ ते विजगा ये दे व दु नि दो श गुणः सा धु स ज्ज
 न विचरति ॥ ६ ॥ जे हे बो लो ज्ञान ते क्षणः ते चि साधु ये पु र्ण प ल ॥ मु
 मुक्षि हे अनुसंधानः सा व धान सा धा वे ॥ ७ ॥ हे चि पा वि जे नि ज ज्ञान
 ते चि अर्थि वे सा धन ॥ उद्धव ठा गी श्री कृष्णः स्वमुखे आप्त सा ग तु
 ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ प्रसक्षे तानु माने न निगमेना म सं विदा ॥ आ ई त व द स ह्ना
 वानिः संगो विचरे दि ह्ना ॥ ९ ॥ टिका ॥ जे ज न्मो नि ना सि वंत ॥ ते सर्व हि जा ग
 ल संत ॥ आ ज्ञा कि सा उ नियां ते र्थे उ दा स विर क्त व त्त वि ॥ १० ॥ स व व ल्या ये वा
 रसे ॥ को न्हि न क रि उ ल्हा से ॥ न श्च र दे ह वा ठ तां ते सेः मुख मान से सुखा व ति ॥ १०

98

उपति विना स लक्ष्मणः सावें देवो सांग तो प्रमाणा ॥ निसभुतां वें
 जन्म मरणाः देखिजे आपण प्रक्ष ॥११॥ अनुमान परितो साचारः जें जें
 देखिजे साकार ॥ मेरु प्रुथ्या दिवाकारः ते हि होति नश्वर प्रलयोति ॥१२॥
 येचि अर्थी गोविंदोक्तिः नासि वें त अष्ट प्रकृति ॥ जिवभाव नाशो प्राप्ति
 गर्जति श्रुतिये तो अर्थ ॥१३॥ अर्थे आमुला हि अनुभव असः जउ विका
 रिते ते नासे ॥ हे कल तसे गा आणवें जग अलायसे नश्वर ॥१४॥ वडिल
 निमाले देखतिः पुत्रपोत्र स्वयं संस्कारिते ॥ त ही स्वमुक्त यि चिंतान करिति
 पडिले प्रांति देह लोके ॥१५॥ पिपु पुत्र पिउं दा ह देतिः उत्तम गतियां चिचि
 तिति ॥ आपुक्ति गति न विचारिति ॥ नश्वरिं आशक्ति देह लोके ॥१६॥ आत्मा के
 बल प्रकारा वलः प्रपु बुज उ मुठ अशानः हे आशकों नि उद्धवं आपनः देवास्ति
 प्रक्षोपुसतु ॥१७॥ उधव उवाच ॥ श्लोक ॥ नैवात्मनो न देहस्य संसृतिर्द्रष्टव्य
 योः ॥ अनामस्वदुशो रीराकस्य स्यादुपलस्यते ॥१८॥ टिका ॥ आत्मानि स

वि

10

11e11

लुक् चिद्धसः यासिनद्यते भवबंधन ॥ देहो जउ मुठ षशानः सासिसंसारजा
 लचउता ॥ १८ ॥ येशे भवबंधनरषिके शिः सांगपां बाधकको सास्त्री ॥ जरि
 तुं संसारना हिमतासिः तो प्रयक्ष जगासि जउतासे ॥ १९ ॥ आत्मासि किवा
 शीतां जातः भवबंधनीदसे स्थान ॥ येचि अर्थिचें नचउते पणः उधवजा
 पलसांगतुः ॥ २० ॥ श्लोक ॥ आत्मा व्ययो मुं साः सुद्धः स्वयं ज्योतिरनाद्यतः ॥
 आशिव हारुवदूषि देहकस्ये हसं सतिः ॥ ११ ॥ टिका ॥ आत्मासि दृप
 विनासिः गुणनिगुणनातले सासि ॥ कर्माकार्पापपुण्यासिः गवाड्यापा
 सिंजसेना ॥ २१ ॥ परादिवायानकठाराः याता मिन्न गिजे परासर ॥
 प्रकृतिगुणिअनीवारः प्रकृतिपुत्रपा मात्मा ॥ २२ ॥ ज्याचि यास्वप्रकाश
 दिप्तिः रविचंद्रादिप्रकाशति ॥ प्रकारौ प्रकासे त्रिजगतिः तेजोमुक्तिपर
 मात्मा ॥ २३ ॥ अे सिया आसीयाये वाईः भवबंधुनलनेकहिं ॥ सूर्यबुडे मृगजलंया
 जेहिः ते आत्मासिपां हि भवबंधु ॥ २४ ॥ खद्योतते जे सूर्यजलेः वा गुला ॥ तेनेका
 लुपले ॥ मुंगिये निपां स्वबळेंः जे उडे सगळें आकास ॥ २५ ॥

७४

वाराणसुळला जडिपडे: जें स्थितरामाजिमेरुबुडे ॥ तद्विभवबंधजा
 स्याकडे: सर्वथानघडे गोविंदा ॥२६॥ देहाकडेभवबंधन: मुखहिनमनि
 तिजगा ॥ देहाजउमुठजज्ञान: सासिभवबंधनकदानघडे ॥२७॥ जेद
 गायेंपोटदु:ख: कोरुंकाष्टयरफडिभुकें ॥ तें देहाकडेयेथासुख: भव
 बंधु हरिकेंलागता ॥२८॥ जेडोगरासितरळपरे: मृतिका ॥ जगा
 लागिपुरे ॥ कोळिसेनिकाक होयआंधार: तेभवभयकारे देहदोटे ॥२९॥
 हलासिदेहाससंगति: वडेभवबंधाबियाति ॥ विचारितातेहिअ
 नेघडेश्रीपतिआरक ॥३०॥ आसासुखासैमाहावनि: देहतोजउमुठ
 काष्टस्थानि: तोमिळतांआसमिळनि: साडिजातनिताकाळ ॥३१॥ जे
 अशिमाजिसंवादे: कापुरजाठपाखनां दे ॥ तें देहासनिजसंमंधे: दे
 होभवबंधेनांदता ॥३२॥ हलासिकाष्टामाजिअशिअसे: परितोका
 ष्टिहोउंनिनसे ॥ मथुनिकाठित्यानिजप्रकासे: जाळिअनायसेका
 काष्टाते ॥३३॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com